Complete mss 27/6/58 (35)

(20)

॥ नरसिंकवउवानक

श्रीगणेशायनमः॥ अस्यश्रीवीरप्रलयकाल
नृसिंहवडवानलमंत्रस्य॥ प्रह्लादऋषिः॥ अनु
ष्टुप्छंदः॥ श्रीवीरप्रलयकालनृसिंहोदेवता॥
स्तंभोद्भवमितिबीजं॥ शत्रुरक्षणार्थमितिशक्तिः
क्तिः॥ हिरण्यकश्यपुसंहारमितिकिलकं॥
श्रीनृहप्रीत्यर्थजपेवि नियोगः॥ अथन्या
सः॥ ॐउग्रवीरंअंगुष्ठाभ्यांनमः॥ महाविष्णुत

र्जनीभ्यां॥ ज्वलंतंमध्यमाभ्यां॥ सर्वतो
मुखंअनामिकाभ्यां॥ ॐनृसिंहंभीषणं
भद्रंकनिष्ठिकाभ्यां॥ ॐमृत्युमृत्युंनमाम्य
हंकरतलकरपृष्ठाभ्यां॥ एवंहृदयादिन्या
सः॥ ॐउग्रवीरंहृदयाय॥ ॐमहावि
ष्णुंशिरसेस्वाहा॥ ज्वलंतंसर्वतोमुखंशिखायैवषट् कवचाय
॥ ॐनृसिंहंभीषणंभद्रंनेत्रत्रयाय

२

बैषट्॥ॐ स्स्सुंम्स्सुंनमाम्यहं अस्त्रायफट्
ॐ उग्रंवीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतोमुखं ॥
नृसिंहंभीषणंभद्रं म्स्सुम्स्सुंनमाम्यहं॥ इतिदि
ग्बंधः॥अथ ध्यानं॥श्रीमन्नृसिंहविभवेगरुड
ध्वजायतापत्रयोपशमनायभवौषधाय॥
तृष्णायवृश्चिकजलाग्निभुजंगरोगक्लेशव्य
यायहरयेगुरवेनमस्ते॥ॐ उग्रंवीरं महाविष्णुं

२

ज्वलंतं सर्वतोमुखं॥नृसिंहंभीषणंभद्रं म्स्सुंम्स्सुंनमा
म्यहं॥ॐ नमो भगवते नृसिंहरुद्रायस्वलितपिंग
ललोचनायवज्रनखवज्रदंष्ट्राकरालायआ
हवनीयगार्हपत्यदक्षिणाग्नितुषांगारवज्रायराक्ष
सोसंहारायमल्हारक्षकायस्त्रीभोस्त्वायरवता
रक्षकायस्त्रशिरक्षणायस्त्रिस्त्रिप्रतिपालनाय
दुष्टमर्दनायहनहन कंपयकंपय घ्रंघ्रंवज्रनृसिं
हायआत्मतंत्ररक्षणाय क्रांक्रींक्रूंक्रैंक्रौं ललल्लुश्री

को

वीरन्दसिंहायपरमंत्रपरयंत्रपरतंत्रछेदनायघेघे
ह्रूंफट्व्याघ्रसिंहशरभमालुकादिदुष्टमृगछेद
नायठंठंठंठंश्रीवीरप्रलयकालेन्रसिंहायराज
भयचोरभयदुष्टभयसर्वभयोच्चाटनायक्लौं।
क्लींक्लूंक्लेंक्लौंवज्रदंष्ट्रायसर्वशत्रूंछिंदिछिं
दिसर्वशत्रूंजिह्वांकीलयकीलयबुद्धिंनाशय
नाशयसर्वदुष्टानांवाचंमुखंस्तंभयस्तंभय
क्षंक्षांक्षंक्षंआत्मरक्षआत्ममंत्ररक्षआत्मतंत्र

रक्षपरवैरीजिह्वांमुद्गलकीलयकीलयअयरलव
अयरवअमभूयंअलवमल्लमरयंववमलमरयंत्रा।
वमलमरयंसवमलमरयंहवमलमरयंक्लांक्लींक्लूंक्लें
क्लौंवीरन्रसिंहायइंइंहुंहुंबंधयबंधयवज्रेनख।
यअग्निदिशांबंधयबंधयज्वालावक्त्रायपयम
दिशांबंधयबंधय॥करालदंष्ट्रायनैऋत्यांदिशां
बंधयबंधय॥पिंगलाक्षायवरुणदिशांबंधय
बंधयऊर्ध्वकर्णायवायव्यांदिशांबंधयबंधय॥

नदिलाक्षायकुबेरदिशांबंधयबंधय॥ऊर्ध्वेबहवे
ईशान्यदिशांबंधयबंधय॥कशपुसंहारायआकोश
दिशांबंधयबंधय॥अघोररूपायपातालदिशांबंध
यबंधय॥उग्रदेहायअंतरिक्षदिशांबंधयबंधय॥
भक्तजनहृदयकमलोद्भवायसर्वदिशांबंधयबं
धय॥हनहनलललललिलिलीलीलुलुलुलुले
लेलेलेलोलोलोलोकुलिलीलीकुलुलुलुकोलो

डाकिनी

लोलोकोको शाकिनीवेताल ब्रह्मराक्षससर्पव्याघ्र
तस्करोपद्रवादि उच्चारणाय शेषवासुकीतक्षक
शंखकुलिकपद्मनागकर्कोटकअनंतोच्चाटणाय
घघघघघीघीघीघीघुघुघुघुघेघेघेघोघोघोघो
घोघोघोघो शाकिनीग्रहं छिंधि छिंधि डाकिनीग्र
हं छिंधि छिंधि डाकिनीग्रहं छिंधि छिंधि सर्पग्रहं छिं
धि छिंधि बालग्रहं छिंधि छिंधि भूतग्रहं छिंधि छिं

धि प्रेतग्रहं छिंधि छिंधि पिशाचग्रहं छिंधि छिंधि परग
दीग्रहं छिंधि छिंधि कात्यायनि ग्रहं छिंधि छिंधि का
टिपापिग्रहं छिंधि छिंधि कङ्कालवीरग्रह छिंधि छिं
धि रक्तवीरग्रहं छिंधि छिंधि स्मशानवीरग्रहं छिं
धि छिंधि फलहारडुर्गाग्रहं छिंधि छिंधि रक्तडुर्गाग्र
हं छिंधि छिंधि स्मशानडुर्गाग्रहं छिंधि छिंधि का
मिनीग्रहं छिंधि छिंधि मोहिनीग्रहं छिंधि [illegible] धि

मोहिनीग्रहं छिंधि छिंधि क्रूरग्रहं छिंधि छिंधि क्रूरग्रहं
छिंधि छिंधि क्रोधग्रहं छिंधि छिंधि मूकग्रहं छिंधि
छिंधि सर्वग्रहं छिंधि छिंधि ज्वरग्रहं छिंधि छिंधि इं
द्रदिशायुग्रहं छिंधि छिंधि आग्निदिशायुग्रहं छिं
धि छिंधि यमदिशायुग्रहं छिंधि छिंधि नैऋ
स दिशायुग्रहं छिंधि छिंधि वारुणीदिशायुग्रह
छिंधि छिंधि वायव्यदिशायुग्रहं छिंधि छिंधि कुबे

रदिशायुग्महं छिंधि छिंधि ईशान्यदिशायुग्महं छिंधि
छिंधि आकाशदिशायुग्महं छिंधि छिंधि पातालदिशा
युग्महं छिंधि छिंधि अंतरिक्षदिशायुग्महं छिंधि
छिंधि सर्वभूतानां लुकालभूतायपिशाचग्रहं
छिंधि छिंधि नारसिंहायवीरदेवतां छिंधि छिंधि
करालदंष्ट्रादुष्टदेवतां छिंधि छिंधि निटिलवक्षा
यवीरस्वरं छिंधि छिंधि कालभैरवा छिंधि छिंधि

कंकालभैरव छिंधि छिंधि रणभैरव छिंधि छिंधि दु
र्गा छिंधि छिंधि कालिका छिंधि छिंधि कंकालिका छिं
धि छिंधि प्रलयकालि छिंधि छिंधि प्रलयकालि छिं
धि छिंधि महाकालि छिंधि छिंधि जटिंग छिंधि छिं
धि अघमणि छिंधि छिंधि स्मशुक्लोच्चनायमहारुद्र
छिंधि छिंधि महाब्रह्मणे इंद्रादि सर्वदेवता छिंधि छिं
धि करालदेवतावदनाय सर्वराक्षस छिंधि छिंधि क

रालदंष्ट्राय किंनरकिंपुरुषाय गरुडगंधर्वादि सिद्धि
विद्याधरादि सर्वगंधर्वछिंधिछिंधिवज्रनखाय वज्रायु
धादि सर्वायुधादि छिंधिछिंधिशार्ङ्गपाणये चापबा
णादि सर्वछिंधिछिंधि गदाधराय त्रिकिंकिन्नरप
तंगमृगसर्वोपद्रवंछिंधिछिंधि सुदर्शनाय आ
त्मरक्षापरछिंधिछिंधि सहस्रबाहवे हिरण्यमर्द
नाय बालरक्षकराय देवतो प्रतिबाल। कोयद्भवरस

८

रवये स्तंभोद्भवाय नवसिंहाय ज्वालाय अहोबलाय लक्ष्मी
श्रीनृसिंहाय योगनादपापकारजीवभार्गवछत्रवभोग
नंद सर्वजनवंदित ब्रह्मरुद्रादि पूजित ऋग्यजुसामाथ
र्वादि सर्ववेदगीत प्रतिपालकानुपन्नवंघदयो बुद्धीकल
कल ॐ श्रीनृसिंहाय घघ कुरुकुरु क्षंक्षं मां रक्ष हुंफट् स्वाहा॥
श्रीनृसिंहवज्रपानलमंत्र संपूर्णमस्तु॥ ॥श्रीलक्ष्मीनृसिं
हार्पणमस्तु॥ ॥श्रीनृसिंहप्रसंन्नोसि॥ ॥